हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

सोमवार, 16 सितंबर 2019, लखनऊ, पांच प्रदेश, 21 संस्करण, नगर संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 24, अंक 215, 22 पेज, मूल्य ₹ 3.00, आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया, विक्रम सम्वत् 2076

शांति की अपील

नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित मलाला यूसुफजई ने संयुक्त राष्ट्र से कश्मीर में शांति लाने और बच्चों को दोबारा स्कूल भेजने में मदद की अपील की है।

प्रयास रंग लाया, दुरुस्त होने लगी ओजोन परत

लखनऊ | **प्रमुख संवाददाता**

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रयास ने रंग लाना शुरू कर दिया है। ओजोन परत को हुआ नुकसान दुरुस्त होने लगा है। लगभग तीन प्रतिशत की दर से ओजोन परत के छेद बंद होने लगे हैं। यह प्रयास जारी रहा तो 2030 तक उत्तरी गोलार्ध और मध्य-अक्षांश पर ओजोन परत पूरी तरह दुरुस्त हो जाएगा।

2030 तक उत्तरी गोलार्ध और मध्य-अक्षांश दुरुस्त हो जाएगाः वरिष्ठ पर्यावरण वैज्ञानिक व स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के तकनीकी महानिदेशक प्रो. भरतराज सिंह ने कहा कि सुखद परिणाम दिखने लगे हैं। ओजोन डिप्लेशन का नवीनतम वैज्ञानिक मूल्यांकन वर्ष 2018 में किया गया। आकड़ों के अनुसार वर्ष 2000 के बाद से ओजोन परत के कुछ हिस्सों मे प्रति दशक एक से तीन प्रतिशत की दर से मरम्मत हुई है। 1990 से 2010 तक 135 बिलियन टन कार्बन डाइ ऑक्साइड के बराबर उत्सर्जन में कमी आई है। यह गति बरकरार रही तो उत्तरी गोलार्ध और मध्य-अक्षांश पर 2030 तक ओजोन परत ठीक हो जायेगी।

ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा घटने से सुधार

बीरबल साहनी पुरावनस्पति अनुसंधान संस्थान के पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सीएम नौटियाल ने कहा कि ओजोन परत और जलवायु की रक्षा के लिए तीन दशकों से अंतर्राष्ट्रीय प्रयास हो रहा है। सबसे ज्यादा नुकसान वाहनों से निकलने ग्रीन हाउस गैसों तथा एसी-फ्रीज में इस्तेमाल होने वाली क्लोरोफ्लोरोकार्बन गैस से हुआ है। 80 के दशक के अंत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मांट्रियल समझौता हुआ। भारत समेत 197 देशों की क्लोरोफ्लोरोकार्बन के उत्पादन एवं उपयोग पर प्रतिबंधित की सहमति बनी।

नुकसान पराबैंगनी किरणें त्वचा एवं आंखों की रेटिना के लिए हानिकारक हैं। कैंसर होने का खतरा है। पराबैंगनी किरणें समुद्र में प्लान्क्टोन को नष्ट करके भोजन श्रृंखला बिगाड़ सकती हैं।

प्रमुख कारण वाहनों से निकलने वाली ग्रीन हाउस गैसें (मीथेन, कार्बन डाई आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, सल्फर डाई आक्साइड)। अब यूरो-4 वाहनों के प्रयोग से कमी आई है।

एसी-रेफ्रीजरेटर में इस्तेमाल होने वाली गैस क्लोरोफ्लोरोकार्बन गैस। इसकी जगह अब आर-22 या अधिक क्षमता वृद्धि के लिए आर-410ए का उपयोग किया जा रहा है।